Toppersnotes
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

प्रथम – प्रश्न पत्र

भाग – 3

सामान्य अध्ययन (भारत एवं विश्व)

SIERRA INNOVATIONS

RPSC 2ND GRADE

सामान्य अध्ययन (भारत एवं विश्व)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भारतीय भूगोल (विस्तार एवं स्थिति)	1
2.	भारत के भौगोलिक भू-भाग	7
3.	भारतीय मानसून तंत्र	35
4.	भारत का अपवाह तंत्र	43
5.	भारत की प्रमुख झीलें	56
6.	भारतीय कृषि	60
7.	भारत के उद्योग	67
8.	भारत की जनगणना	72
9.	विश्व के महाद्वीप	76
10.	विश्व के महासागर	93
11.	विश्व की पवन प्रणाली	105
12.	पर्यावरणीय समस्याएँ एवं वैश्विक स्तर पर उपाय	113
13.	राज्य सरकार द्वारा संचालित प्रमुख जन कल्याणकारी योजनाएँ	122
14.	राष्ट्रीय आय	137
15.	भारत की विदेश नीति एवं नेहरू का योगदान	144
16.	भारत की विदेश नीति का विकास	152
17.	महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन	156
18.	संवैधानिक विकास की पृष्ठभूमि	167
19.	भीमराव अंबेडकर एवं भारतीय संविधान का निर्माण एवं विशेषताएँ	178
20.	भारत में संघीय व्यवस्था	184
21.	संविधान के मूल अधिकार, नीति निदेशक तत्व एवं मूल कर्त्तव्य	190
22.	भारत का राष्ट्रपति (भाग 5-संघ)	194

23.	भारत का उपराष्ट्रपति	202
24.	भारत की प्रधानमंत्री एवं उसकी शक्तियाँ	207
25.	संविधान संशोधन	210
26.	राजनीतिक दल एवं उसकी भूमिका	217
27.	संयुक्त राष्ट्र संघ एवं भारत का योगदान	221
28.	भूमण्डलीकरण	231
29.	परमाणु अप्रसार नीतियाँ	233

भारतीय भूगोल

(Indian Geography)

भारत का विस्तार

- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4 से 37°6 उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 68°7 से 97°25 पूर्वी देशान्तर है परन्तु भारत में उत्तर से दक्षिण तक की दूरी, पूर्व से पश्चिम की दूरी से अधिक है क्योंकि ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर बढ़ने पर देशान्तर के बीच दूरी कम होती जाती है परन्तु अक्षांशों के बीच दूरी समान रहती है ।
- भारत का क्षेत्रफल = 3287263 किमी.^{2} = लगभग 32.8 लाख किमी.^{2}
- विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4% भारत का क्षेत्रफल है ।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में 7th स्थान है ।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से अधिकतम क्षेत्रफल वाले देश–
  - रूस
  - कनाडा
  - चीन
  - यू.एस.ए
  - ब्राजील
  - ऑस्ट्रेलिया
  - भारत
  - अर्जेन्टिना
  - कजाकिस्तान
  - अल्जीरिया

- भारत की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 121 करोड है जो विश्व की जनसंख्या का 17.5% है ।
- नवीनतम आंकाडो के अनुसार 2021 मे भारत की जनसंख्या लगभग 139 करोड हो चुकी है ।
- जनसंख्या के आधार पर विश्व में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है ।
- भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत, नेपाल, चीन तथा भूटान देश है तथा पश्चिम में अरब सागर, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार है और दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर से घिरा है ।
- भारत में अण्डमान–निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाडी में स्थित है तथा लक्षद्वीप अरब सागर में स्थित है ।
- भारत के दक्षिणी द्वीप अण्डमान–निकोबार में 70° उत्तरी अक्षांश पर इंन्दिरा प्वाइण्ट स्थित है जो ग्रेट निकोबार के 6°15′ उत्तरी अक्षांश पर स्थित है । इसे पिग्मेलियन प्वाइंट नाम से भी जाना जाता है ।
- अरावली की पहाडियाँ राजस्थान में स्थित है । यह सबसे पुरानी चट्टानों से बनी है । इस पहाडी की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट आबूपर स्थित गुरुशिखर है । इसकी ऊँचाई 1722 मी. है ।
- विन्ध्याचल का पठार झारखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं छत्तीसगढ राज्यों में है । यह परतदार चट्टानों का बना है । विन्ध्याचल पर्वतमाला उत्तर भारत को दक्षिण भारत से अलग करती है ।
- मैकाले पठार छत्तीसगढ राज्य में स्थित है । मैकाले पहाडी का सर्वोच्च शिखर अमरकण्टक है । इसकी ऊँचाई 1036 मी. है । यह पुरानी चट्टानों का बना एक ब्लॉक पर्वत है ।

- सतपुडा की पहाडियाँ मध्य प्रदेश में हैं । ये ज्वालामुखी चट्टानों की बनी हैं । इनकी सबसे ऊँची चोटी धूपगढ (1350 मी.) है ।
- दक्कन का पठार महाराष्ट्र राज्य में है । यह ज्वालामुखी बेसाल्ट चट्टान का बना है । यह काली मिट्टी का क्षेत्र है । इसके पश्चिमी हिस्से में सह्याद्रि की पहाडी है । सह्याद्रि की सबसे ऊँची चोटी कल्सुबाई है ।
- धारवाड का पठार कर्नाटक राज्य में है । यह परिवर्तित चट्टानों का बना है । इस पठार के पश्चिमी भाग में बाबा बुदन की पहाडी तथा ब्रह्मगिरि की पहाडी है ।

अक्षांश का प्रभाव

- भारत का अक्षांशीय विस्तार 30° होने के कारण भारत में जलवायु, मृदा तथा वनस्पति से संबंधित विविधता पाई जाती है ।
- कर्क रेखा ($23\frac{1}{2}°N$)भारत को दो प्रमुख भागों में बाँटती है- भारत का दक्षिणी भाग ऊष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में तथा उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में स्थित है ।
- भारत में उष्ण कटिबन्धीय मानसून जलवायु पाई जाती है क्योंकि उत्तर में स्थित हिमालय पर्वत साइबेरिया से आने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है ।
- कर्क रेखा भारत के निम्नलिखित 8 राज्यों से होकर गुजरती है ।

- गुजरात
- राजस्थान
- मध्यप्रदेश
- छत्तीसगढ
- झारखण्ड
- पश्चिम बंगाल
- त्रिपुरा
- मिजोरम

देशान्तर का प्रभाव

- भारत का देशान्तरीय विस्तार 30° होने के कारण भारत के सबसे पूर्वी तथा पश्चिमतम भाग के बीच 2 घंटे का अन्तर पाया जाता है ।
- 82½° पूर्वी देशान्तर को भारत की स्थानीय समय गणना के लिए एक मानक देशान्तर के रूप में चुना गया है । यह रेखा प्रयागराज के नैनी से होकर गुजरती है ।
- भारत का मानक समय **GMT** से 5½ घंटे आगे है ।
- 82½° पूर्वी देशान्तर निम्नलिखित राज्यों से होकर गुजरती है :-
  - उत्तर प्रदेश
  - मध्यप्रदेश
  - छत्तीसगढ
  - ओडिशा
  - आंध्र प्रदेश

Q.1 क्या उत्तर-पूर्वी राज्यों को एक पृथक समय दिया जाना चाहिए ?

Ans. उत्तर-पूर्वी राज्यों की जनता की यह माँग रही है कि उन्हें पृथक समय दिया जाए क्योंकि भारत के समय से उनका समय आगे होने के कारण उनकी दिनचर्या पर नकारात्मक प्रभाव पडता है ।

पृथक समय के पक्ष में निम्नलिखित तर्क है –

(i). समय का उनकी जैविक घडी के अनुसार होना उन लोगों की कार्यक्षमता को बढाएगा ।

(ii). इससे लगभग 2.3 अरब यूनिट बिजली की बचत होगी ।

(iii). उत्तर-पूर्वी राज्यों की जैव विविधता के लिए यह सकारात्मक होगा ।

(iv). यदि उनकी यह माँग मान ली जाए तो उत्तर-पूर्वी राज्यों का विश्वास केन्द्र सरकार में बढेगा ।

(v). पहले भी उत्तर-पूर्वी राज्यों में चाय-बागानी समय था । उसी के अनुसार अब भी उनके लिए पृथक समय रखा जा सकता है ।

पृथक समय के विपक्ष में तर्क

(i). पृथक समय से उत्तर-पूर्वी राज्यों में अलगाववादी भावना बढेगी।

(ii). भारत में अभी शिक्षा तथा जागरूकता कम होने के कारण अव्यवस्था की स्थिति बन सकती है यदि समय में परिवर्तन किया गया ।

(iii). परिवहन से संबंधित समस्या उत्पन्न हो सकती है ।

(iv). विभिन्न कार्यस्थलों के बीच समय बिगड सकता है ।

निष्कर्ष

- हाल ही में गुवाहाटी कोर्ट का फैसला इस मुद्दे का उचित समाधान हो सकता है । गुवाहाटी न्यायालय के अनुसार उत्तर-पूर्वी राज्यों की पृथक समय की माँग उचित है लेकिन उन्हें पृथक समय देने का यह उचित समय नहीं है । पृथक समय के स्थान पर उत्तर-पूर्वी राज्यों में दिन के प्रकाश की बचत **(Day Light Saving)** की जा सकती है ।
- 2007 में **National Institute of Advanced Studies** ने उत्तर पूर्व के समय को आधा घंटा आगे करने का सुझाव था। अतः इस सुझाव पर अमल किया जा सकता है ।

देश के चार सीमा बिन्दु

- पूर्वी बिन्दु – किबिथु (अरूणाचल प्रदेश)
- पश्चिम बिन्दु – गौर मोता (गुजरात)
- उत्तरी बिन्दु – इन्दिरा कॉल (लद्दाख)
- दक्षिणी बिन्दु – इन्दिरा प्वाइन्ट (ग्रेट निकोबार द्वीप)

Border of India

1. स्थलीय सीमा

- भारत की स्थलीय सीमा लगभग 15200 किमी. (15106.7 किमी.) है ।
- भारत की स्थलीय सीमा निम्न देशों को स्पर्श करती है :-
  - **(i).** बांग्लादेश **= 4096.7 km** (सर्वाधिक)
  - **(ii).** चीन **= 3488 km**
  - **(iii).** पाकिस्तान **= 3323 km**
  - **(iv).** नेपाल **= 1751 km**
  - **(v).** म्यांमार **= 1643 km**
  - **(vi).** भूटान **= 699 km**
  - **(vii).** अफगानिस्तान **= 106 km** (सबसे कम)

देश तथा सीमा पर स्थित भारतीय राज्य			
क्र. सं.	देश	कुल संख्या	भारतीय राज्य
1.	चीन	5	जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
2.	नेपाल	5	उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
3.	बांग्लादेश	5	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
4.	म्यांमार	4	अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम
5.	पाकिस्तान	4	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू कश्मीर
6	भूटान	4	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
7.	अफगानिस्तान	1	जम्मू कश्मीर

- भारत-पाकिस्तान की सीमा रेखा = रेडक्लिफ रेखा है जो 15 अगस्त 1947 को निर्धारित की थी
- भारत-चीन की सीमा रेखा = मैकमोहन जिसे 1914 ई. मे शिमला मे निर्धारित की गई ।
- भारत-अफगानिस्तान की सीमा रेखा = डूरन्ड रेखा

2. जलीय सीमा

- भारत की जलीय सीमा = 7516.6 किमी.
  Mainland = 5422.6 km & Island = 2094 km
- सर्वाधिक लम्बी तटीय सीमा वाले राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश :-

राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	तटरेखा (किमी.)
अण्डमान निकोबार द्वीप समूह	1962
गुजरात	1215
आन्ध्र प्रदेश	970
तमिलनाडु	907

महाराष्ट्र	652
लक्षद्वीप	132
पुडुचेरी	47
दमन एवं दीव	42

तटवर्ती/सीमावर्ती सागर

1. सीमावर्ती सागर **(Territorial Sea)**
2. संलग्न सागर **(Contiguous Sea)**
3. अनन्य आर्थिक क्षेत्र **(Exclusive Economic Zone)**

1. सीमावर्ती सागर

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 12 समुद्री मील की दूरी तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है ।

2. संलग्न सागर

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 24 समुद्री मील तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत के पास वित्तीय अधिकार हैं ।
- यहाँ भारत सीमा शुल्क **(Custom Duty)** वसूल सकता है ।

3. अनन्य आर्थिक क्षेत्र

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 200**nm** तक स्थित है।
- इस क्षेत्र में भारत के पास आर्थिक अधिकार है तथा यहाँ भारत संसाधनों का दोहन, द्वीप निर्माण तथा अनुसंधान आदि कर सकता है ।

  उच्च सागर :- यहाँ सभी देशों का समान अधिकार होता है ।

तटवर्ती सीमा के लाभ

- तटवर्ती सीमा दक्षिण भारत में समकारी जलवायु **(Moderate Climate)** का निर्माण करती है ।
- तटवर्ती सीमा बन्दरगाहों के निर्माण के लिए उपयोगी है । इन बन्दरगाहों के माध्यम से आयात-निर्यात व्यापार किया जाता है ।
- तटवर्ती सीमा भारत को विभिन्न देशों से जोडती है ।
- पर्यटन की दृष्टि से भी यह उपयोगी होती है ।
- महासागरीय संसाधनों तक तटवर्ती सीमा पहुँच बनाती है ।
- सुरक्षा की दृष्टि से भी तटवर्ती सीमा महत्वपूर्ण है ।

तटवर्ती सीमा के नुकसान

- सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पडता है ।
- समुद्री लुटेरों, तस्करी आदि का भी डर बना रहता है ।
- तटवर्ती सीमा के रखरखाव एवं सुरक्षा के लिए अतिरिक्त व्यय करना पडता है ।

निष्कर्ष :- तटवर्ती सीमा के नकारात्मक प्रभाव होने के बावजूद यह भारत के लिए लाभकारी है ।

भारतीय उपमहाद्वीप **(Indian Subcontinent)**

- उपमहाद्वीपीय उस भाग को कहा जाता है जो महाद्वीप में अपनी एक पृथक पहचान रखता हो ।
- भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण की दृष्टि से भारत एशिया के अन्य देशों से पृथक पहचान रखता है ।
- भारत के उत्तरी भाग में पर्वत स्थित हैं जैसे - हिन्दुकुश, सुलेमान, हिमालय, पूर्वांचल तथा पूर्व में अराकानयोगा जो भारत को एशिया के मुख्य भूभाग से पृथक करते हैं ।
- भारत के दक्षिणी भाग में महासागरीय क्षेत्र स्थित है जो भारत तथा पडौसी देशों को पृथक पहचान दिलाता है ।
- भारतीय उपमहाद्वीप में निम्नलिखित देश सम्मिलित हैः-

➢ भारत	➢ भूटान
➢ पाकिस्तान	➢ बांग्लादेश
➢ अफगानिस्तान	➢ श्रीलंका
➢ नेपाल	➢ मालदीव

भारत के भौगोलिक भू–भाग

(Physiography Devision of India)

भारत के भौगोलिक भू–भाग

इसे मुख्यतः 5 भौतिक भागों मे बाँटा है जो निम्न है –

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेश
2. उत्तरी मैदानी प्रदेश
3. प्रायद्वीप पठारी प्रदेश
4. तटीय मैदानी प्रदेश
5. द्वीपीय समूह प्रदेश

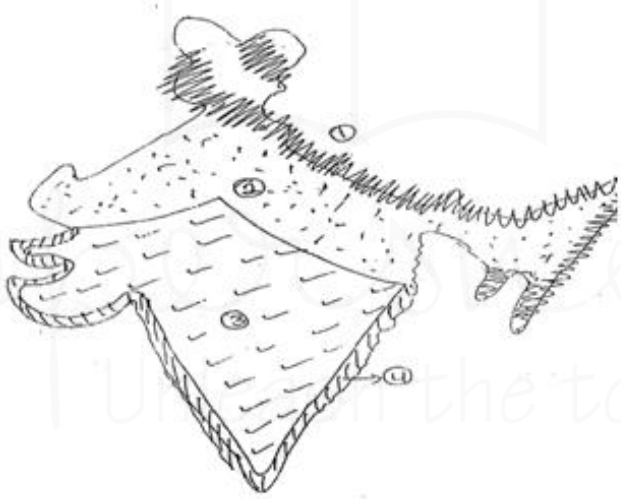

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेश

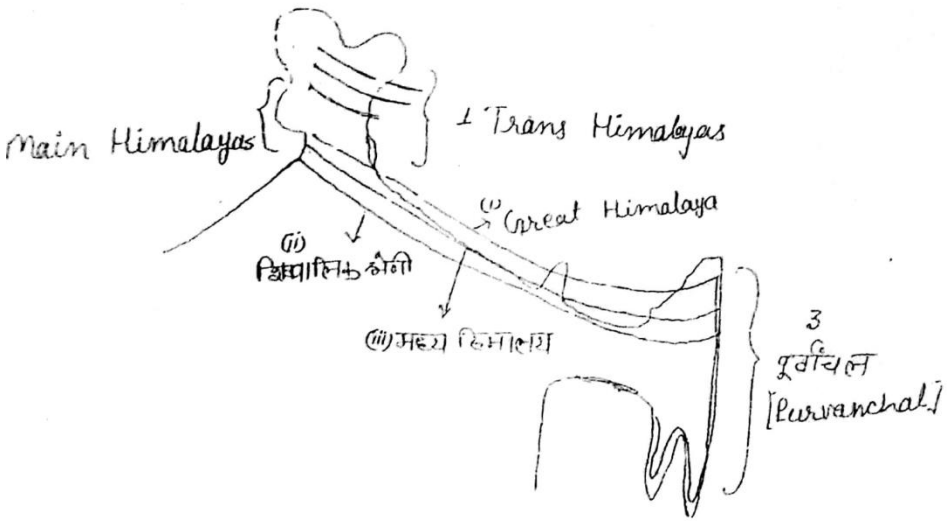

- भारत के उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत तंत्र हिमालय पर्वतीय प्रदेश का निर्माण करता है ।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण नवीन वलित पर्वतों से हुआ है ।
- ये वलित पर्वत 'यूरेशियन प्लेट' तथा 'भारतीय प्लेट' के अभिसरण से निर्मित हुए है ।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण टर्शरी काल में हुआ है, इसलिए इसे 'टर्शरी पर्वत तंत्र' भी कहा जाता है । **Tertiary Period** (टर्शरी काल) = (70 मिलियन वर्ष–11 मिलियन वर्ष पूर्वतक)
- यह पर्वत तंत्र विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत तंत्र है, इसलिए इस तंत्र में बहुत से अल्पाइन हिमनद भी पाये जाते है ।
- भारत की सबसे प्रमुख नदियों का उदगम इसी पर्वत पर स्थित हिमनदों से होता है ।
- इस पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:–

ट्रांस हिमालय

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग ट्रांस हिमालय कहलाता है ।

- यह मुख्य रूप से 'जम्मू–कश्मीर' व 'तिब्बत' में स्थित है ।
- मुख्य हिमालय के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहाँ शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती है :–

(a) काराकोरम श्रेणी

- यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी कहलाती है ।
- यह ट्रांस हिमालय की सबसे लम्बी व ऊँची श्रेणी है ।
- 'माउण्ट गोडविन ऑस्टिन' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जो कि भारत की सबसे ऊँची तथा विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है । (8611 किमी.)
- यह श्रेणी अपने अल्पाइन हिमनदों के लिए विख्यात है :–
  1. बतुरा
  2. हिस्पार
  3. बियाको
  4. बालतोरो
  5. सियाचिन

- सियाचिन हिमनद' नुबरा घाटी में स्थित है तथा इस हिमनद के पिघलने से नुबरा नदी का उदगम होता है, जो कि सिन्धु की सहायक नदी है ।

(b) लद्दाख श्रेणी

- काराकोरम श्रेणी के दक्षिण में स्थित है ।
- तिब्बत में इस श्रेणी का विस्तार 'कैलाश पर्वत' के नाम से जाना जाता है ।
- तिब्बत में इस श्रेणी के दक्षिण में 'मानसरोवर झील' स्थित है ।
- 'रकापोशी चोटी' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है ।

(c) जास्कर श्रेणी

- ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी ।
- जास्कर तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य सिन्धु घाटी स्थित है ।

Note

लद्दाख पठार

- काराकोरम श्रेणी तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य स्थित अन्तः पर्वतीय पठार है ।
- इस पठार की ऊँचाई लगभग 4800 मीटर है तथा यह भारत का सबसे ऊँचा पठार है ।
- वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस पठार पर शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है, इसलिए यह एक 'ठण्डे मरूस्थल' का उदाहरण है ।
- इस पठार पर बहुत सी खारे पानी की झील पाई जाती है ।

मुख्य हिमालय

- यह पर्वतीय प्रदेश का दूसरा प्रमुख भाग है ।
- यह भाग सिन्धु नदी घाटी से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक स्थित है ।
- इस भाग के दोनों ओर अक्षसंधीय मोड **(Systaxial Bend)** पाया जाता है ।
- इस भाग भाग की चौडाई पश्चिमी भाग में अधिक तथा पूर्वी भाग में कम है ।
- यह लगभग 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख श्रेणियाँ हैः–
  (**a**) वृहद् हिमालय (Greater Himalaya)
  (**b**) मध्य हिमालय (Middle Himalaya)
  (**c**) शिवालिक (Shivalik)

(a). वृहद् हिमालय(Greater Himalaya)

- यह श्रेणी नंगा पर्वत से नामचा बरवा के बीच स्थित है ।
- यह 2400 किमी. की दूरी तक विस्तृत है तथा इसकी औसत चौडाई 25 किमी. एवं औसत ऊँचाई 6100 मी. है ।
- ऊँचाई अधिक होने के कारण यह पर्वत वर्ष भर बर्फ से ढका रहता है अतः इसे हिमाद्री भी कहा जाता है ।
- यह विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है ।
- इस श्रेणी में विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी.) स्थित है ।
- माउण्ट एवरेस्ट की वर्तमान ऊँचाई 0.86 मीटर बढने के कारण 8848.46 हो गई है ।
- इस श्रेणी मे कंचनजंघा (8598 मी.), मकालू (8484 मी.) धौलागिरी (8172 मी.), नंगा पर्वत (8126 मी.) आदि स्थित है ।
- माउण्ट एवरेस्ट नेपाल–चीन सीमा पर स्थित है ।
- इसे नेपाल में सागरमाथा कहते है । (माउण्ट एवरेस्ट को)
- इस पर्वत पर बहुत से प्रमुख हिमनद स्थित है । **e.g.-** गंगोत्री, यमुनोत्री, सतोपंथ, पिंडारी, मिलान इत्यादि ।

- इस श्रेणी में बहुत से दर्रे है जिन्हें स्थानीय भाषा में 'ला' कहा जाता है ।
- वृहत हिमालय के प्रमुख दर्रे निम्न है :-

➢ बुर्जिल	➢ नीति
➢ जोजीला	➢ लिपुलेख
➢ बडालाचा	➢ नाथुला
➢ शिपकीला	➢ जेलेप्ला
➢ माना	➢ बोमडीला

(i). <u>बुर्जिल दर्रा</u>

- यह श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से घुरूपैठ गतिविधियाँ होती है ।

(ii). <u>जोजिला दर्रा</u>

- यह दर्रा श्रीनगर को लेह से जोडता है ।
- इस दर्रे से **NH-1D** गुजरता है ।

(iii). <u>बाडालाचा दर्रा</u> – यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को लेह से जोडता है ।

(iv). <u>शिपकिला दर्रा</u>

- यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे का निर्माण सतलज नदी द्वारा किया गया है ।
- इसी दर्रे के माध्यम से सतलज नदी भारत में प्रवेश करती है ।
- इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(v). <u>माना:-</u> यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vi). <u>नीति:-</u> यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vii). <u>लिपुलेख दर्रा</u>

- यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से कैलाश मानसरोवर की यात्रा की जाती है अतः इसे 'मानसरोवर का द्वार' भी कहा जाता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(viii). <u>नाथूला दर्रा</u>

- यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे से प्राचीन रेशम मार्ग गुजरता था।
- इस दर्रे का उपयोग चीन के साथ व्यापार एवं कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए किया जाता है
- मानसरोवर की यात्रा इस दर्रे के माध्यम से अधिक सुगम होती है ।

(ix). <u>जेलेटला दर्राः-</u> यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।

(x). <u>बोमडीला दर्राः-</u> यह दर्रा अरूणाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।

(b). <u>मध्य हिमालय (Middle Himalaya)</u>

- इसे हिमाचल हिमालय या लघु हिमालय भी कहते है ।
- यह श्रेणी 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इसकी औसत चौडाई 50 किमी. है ।
- इस श्रेणी की ऊँचाई लगभग 3700–4500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इस श्रेणी के विभिन्न स्थानीय नाम हैः-
  - जम्मू कश्मीर – पीरपंजाल
  - हिमाचल प्रदेश – धौलाधर
  - उत्तराखण्ड – मसूरी/नागटिब्बा
  - नेपाल – महाभारत
  - सिक्किम – डोकया
  - भूटान – ब्लैक माउण्टेन

- मध्य हिमालय तथा वृहत हिमालय के बीच बहुत सी घाटियाँ स्थित हैः-
  - कश्मीर घाटी = वृहद् हिमालय – पीर पंजाल
  - कुल्लू घाटी = वृहद् हिमालय – धौलाधर
  - कांगडा घाटी **(HP)** = वृहद् हिमालय – मसूरी
  - काठमांडू घाटी = वृहद् हिमालय – महाभारत

- इस श्रेणी पर ग्रीष्म ऋतु में शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान पाए जाते है । जिन्हें जम्मू कश्मीर मे 'मर्ग' तथा उत्तराखण्ड मे 'बुग्याल, पयार' कहा जाता है ।
- शीत ऋतु के दौरान यह श्रेणी बर्फ से ढक जाती है ।
- इस श्रेणी पर स्थित घास के मैदानों का उपयोग स्थानीय समुदाय अपने पशुओं को चराने के लिए करते है ।

- इस श्रेणी क्षेत्र में बहुत से पर्यटन स्थल पाए जाते हैं । **e.g.** कुल्लू, मनाली, नैनीताल, मसूरी आदि ।
- इस श्रेणी में कुछ प्रमुख दर्रे पाए जाते हैं :-
  1. पीरपंजाल दर्रा :- यह दर्रा श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
  2. बनिहाल दर्रा :- श्रीनगर को जम्मू से जोडता है, **NH-1A** इस दर्रे से गुजरता है । इस दर्रे में जवाहर सुरंग स्थित है ।

ऋतु प्रवास **(Transhumance)**

- ऋतुओं में होने वाले परिवर्तन के साथ जब स्थानीय समुदाय अपने पशुओं के साथ चारे तथा जल की तलाश/खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पलायन करते हैं ।, उसे ऋतु प्रवास कहा जाता है ।
- जम्मू-कश्मीर में गुर्जर तथा बकरवाल समुदाय ऋतु प्रवास करते हैं ।
- ग्रीष्म ऋतु के दौरान ये पर्वतों की ओर तथा शीत ऋतु में घाटी क्षेत्र की ओर पलायन करते हैं ।

करेवा **(Karewa)**

- पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के कारण कश्मीर घाटी क्षेत्र में अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों द्वारा लाए गए अवसादों से भर गई तथा इन्हीं अवसादों को करेवा कहते हैं ।
- करेवा कश्मीर घाटी क्षेत्र में पाए जाने वाले उपजाऊ हिमनद, नदी एवं झील के अवसाद **(Glacial, Riverine & Lacustrine)** हैं । इस अवसादों का उपयोग केसर व चावल की खेती के लिए किया जाता है ।

(C). शिवालिक **(Shivalik)**

- शिवालिक श्रेणी की ऊँचाई 500–1500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इसकी चौडाई 10–50 किमी. है ।
- शिवालिक को विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है:-
  - जम्मू कश्मीर – जम्मू हिल्स
  - उत्तराखण्ड – दूधवा/धांग (दूदवा/धांग)
  - नेपाल – (चूडियाघाट)
  - आंध्रप्रदेश (दाफला)
  - **Miri** (मिरी)
  - **Abhor** (अबोर)
  - **Mishmi** (मिश्मी)

- शिवालिक श्रेणी के निर्माण के दौरान मध्य हिमालय तथा शिवालिक श्रेणी के बीच अस्थाई झीलों का निर्माण हुआ था ।
- यह झीलें कालान्तर में अवसादों से भर गईं जिससे समतल घाटियों का निर्माण हुआ।
- इन घाटियों को पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में 'दून' तथा पूर्वी हिमालय क्षेत्र में 'द्वार' कहते हैं । उदाहरण :- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून, हरिद्वार, निहांगद्वार इत्यादि ।
- इन घाटियों का उपयोग चावल की खेती के लिए किया जाता है ।

चोस (Chos)

- हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब में स्थित शिवालिक श्रेणी क्षेत्र में मानसून के दौरान अस्थायी धाराओं का निर्माण होता है, जिन्हें स्थानीय भाषा में चोस कहते हैं ।
- यह धाराएँ शिवालिक को विभिन्न भागों में विभाजित कर देती है ।

(D). पूर्वांचल (Purvanchal)

- उत्तर-पूर्वी राज्यों में उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत पहाड़ियों को पूर्वांचल कहते हैं ।
- पूर्वांचल का निर्माण इण्डो-ऑस्ट्रेलियन तथा बर्मा प्लेट के अभिसरण से हुआ है ।
- यह बालू पत्थर से निर्मित पहाड़ियाँ है ।
- दक्षिण-पश्चिम मानसून पवनों द्वारा यहाँ भारी वर्षा प्राप्त होती है अतः यहाँ बहुत अधिक जैव-विविधता पाई जाती है ।
- यह स्थान विश्व के 36 **Hotspots** में सम्मिलित है ।
- नागा पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी सरामती है ।
- मिजो पहाड़ियों को लुसाई पहाड़ियाँ भी कहते है ।
- मिजो पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी ब्लू माउण्टेन है ।
- बराइल श्रेणी नागा पहाड़ियों एवं मणिपुर पहाड़ियों को अलग करती है ।

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का प्रादेशिक विभाजन

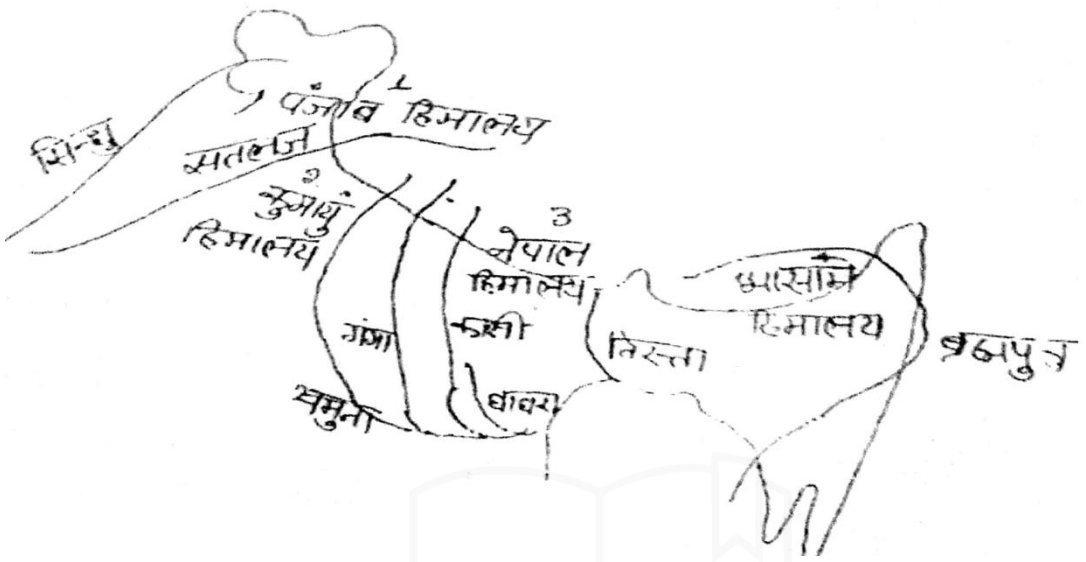

(a). कश्मीर/पंजाब हिमालय **(Kashmir/Punjab Himalaya)**

- हिमालय का यह भाग सिंधु तथा सतलज नदी के बीच स्थित है ।
- यह लगभग 560 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में जास्कर, पीरपंजाल श्रेणी एवं जम्मू पहाडियाँ स्थित है ।
- इस भाग मे कांगडा, लाहुल तथा स्पीति की घाटियाँ है, जबकि राकसताल और मानसरोवर झील भी है ।
- इस भाग में हिमालय की चौडाई सर्वाधिक पाई जाती है जो लगभग 250–400 किमी. के बीच पाई जाती है ।
- यहाँ हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से बढने लगती है ।

(b). कुमायूँ हिमालय **(Kumao Himalaya)**

- हिमालय का यह भाग सतलज से काली नदी के बीच स्थित है ।
- यह 320 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- यह भाग मुख्य रूप से उत्तराखण्ड में स्थित है ।
- यहाँ कुछ प्रमुख चोटियाँ स्थित है । **e.g.-** नंदा देवी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, कामेट, त्रिशुल ।
- नंदा देवी कुमायूँ हिमालय की सबसे ऊँची चोटी है (7558 मी.)

(c). नेपाल हिमालय **(Nepal Himalaya)**

- यह भाग काली तथा तिस्ता नदी के बीच स्थित है।
- यह भाग 800 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई सर्वाधिक पाई जाती है।
- यहाँ कई प्रमुख ऊँची चोटियाँ पाई जाती है।**e.g.-** माउण्ट एवरेस्ट, कंचनजंगा (8598 मी.)

- यहाँ हिमालय की चौडाई अत्यधिक कम हो जाती है।
- यहाँ की प्रमुख चोटियाँ कुला, कांगडा, चुमलहारी, काबरु, जांग नामचाबरवा है ।
- काठमांडू घाटी यहाँ की प्रमुख घाटी है ।

(d). असम हिमालय **(Assam Himalaya):-**

- यह भाग तिस्ता से दिहांग नदी के बीच स्थित है।
- यह 720 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- यहाँ हिमालय की चौडाई सबसे कम हो जाती है जो लगभग 150 किमी. हो जाती है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से कम होने लगती है।
- यहाँ की प्रमुख चाटियाँ कुला, कांगडा, चमलहारी, काबरु, जांग, नामचा बरखा है ।

हिमालय का महत्व

1. हिमालय पर्वत भारत को प्राकृतिक सीमा प्रदान करता है जिसके कारण भारत को एक उपमहाद्वीप की संज्ञा प्राप्त होती है ।
2. भारत की जलवायु पर भी हिमालय पर्वत का प्रभाव रहता है । हिमालय पर्वत साइबेरिया से आने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है । यह मानसून पवनों को भारत में वर्षा करने के लिए बाध्य करते है
3. हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की वनस्पति पाई जाती है । यहाँ बहुत अधिक जैव विविधता पाई जाती है ।
4. यहाँ बहुत से हिमनद स्थित है जिनसे भारत की प्रमुख नदियों का उदगम होता है ।
5. हिमालय का धार्मिक महत्व भी है । हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में बहुत से तीर्थस्थल स्थित है ।
6. पर्यटन की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ बहुत से पर्वतीय स्थल **(Hill Station)** स्थित है ।

- करेवा
- चोरु
- सियाचिन हिमनद
- नुवा घाटी
- उत्तरी पर्वतीय प्रदेश
- ट्रांस हिमालय
- वृहद् हिमालय
- मध्य हिमालय
- शिवालिक
- पूर्वांचल
- हिमालय का महत्व
- हिमालय का प्रादेशिक विभाजन

→ महत्वपूर्ण प्रश्न

उत्तरी मैदानी प्रदेश

- इस मैदानी प्रदेश का निर्माण नदियों द्वारा जमा किए गए अवसादों से होता है ।
- यह विश्व के सबसे विस्तृत जलोढ मैदानी प्रदेश है ।
- यह भारत का नवीनतम भौतिक प्रदेश है ।
- इस अत्यधिक उपजाऊ मैदान का उपयोग कृषि के लिए किया जाता है तथा यहाँ सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व पाया जाता है ।

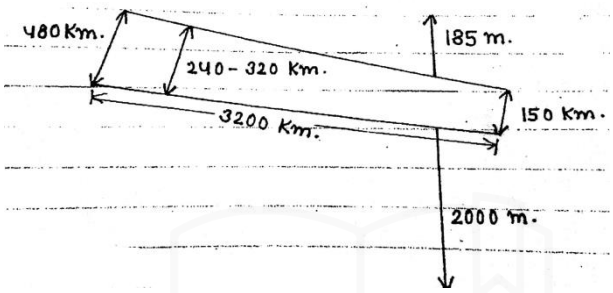

- यह प्रदेश 7 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है ।
- इस मैदानी प्रदेश की चौडाई लगभग 240–320 किमी. पाई जाती है ।
- इन मैदानों में जलोढ अवसादों का जमाव 2000 मी. की गहराई तक पाया जाता है ।
- यह एक समतल मैदान है जिनका ढाल मन्द है ।

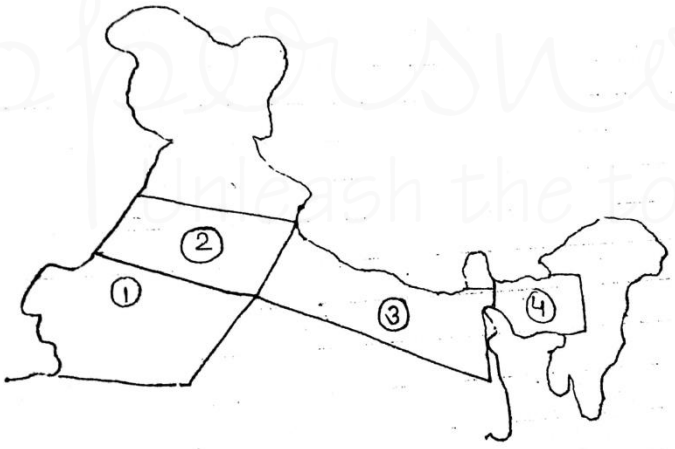

राजस्थान के मैदान

- यह राजस्थान में अरावली पर्वतों के पश्चिम में स्थित मैदानी क्षेत्र है ।
- इस क्षेत्र में शुष्क एवं अर्द्धशुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- वर्षा के आधार पर इस भाग को दो उपभागों में विभाजित किया जाता है ।
  (i). अरावली पर्वत तथा 25 सेमी. समवर्षा रेखा के मध्य स्थित भाग में अर्द्धशुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है तथा यह भाग 'राजस्थान बांगर' कहलाता है । (25 से 50 सेमी. वर्षा)
  (ii). 25 सेमी. समवर्षा रेखा तथा 'रेड क्लिफ रेखा' के मध्य स्थित भाग, जहाँ मरूस्थलीय परिस्थितियाँ पाई जाती है तथा यह क्षेत्र 'मरूस्थलीय' कहलाता है । (25 सेमी. से कम वर्षा)